समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 22 September 2026

शेख हसीना का निडर सन्देश : “मुझे फर्क नहीं पड़ता, अल्लाह ने जो ज़िंदगी दी है वही लेगा”

Publisher

Published on 17 Nov 2025

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री **शेख हसीना** ने उन गंभीर आरोपों और सुनवाई के बीच एक भावनात्मक लेकिन दृढ़ सन्देश दिया है, जो उनकी राजनीतिक और कानूनी स्थिति को और जटिल बना रहे हैं। अंतरिम ट्राइब्यूनल की घोषित सुनवाई के पहले, हसीना ने समर्थकों को यह भरोसा दिया है कि उन्हें किसी फैसले से डर नहीं है — उनका कहना है, “मुझे फर्क नहीं पड़ता ... अल्लाह ने मुझे ज़िंदगी दी है, वही उसे वापस लेगा।”

यह बयान ऐसे समय में आया है, जब उन पर ज्यादा गंभीर आरोप लगे हुए हैं। शेख हसीना पर गंभीर आरोप हैं — वह बिना हथियारों के छात्र प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी का आदेश देने, हवाई सहायता का इस्तेमाल करने और हिंसात्मक दमन का नेतृत्व करने जैसी कथाओं का सामना कर रही हैं। ट्राइब्यूनल ने उन पर “मानवता के विरुद्ध अपराधों” के भी जुर्म दर्ज किए हैं, और उन्हें घातक हथियारों के इस्तेमाल के लिए दोषी पाया जा सकता है।

हसीना के इस आत्मविश्वास भरे बयान को उनके समर्थकों ने उनकी दृढ़ता और साहस का प्रतीक माना है। उन्होंने यह संदेश सोशल मीडिया और सार्वजनिक वक्तव्यों के माध्यम से फैलाई है, जिससे यह स्पष्ट हो गया है कि वह कानूनी लड़ाई के लिए तैयार हैं, भले ही ट्राइब्यूनल का मनो-माहौल उन पर बेहद प्रतिकूल हो। उनके यह शब्द न केवल उनके व्यक्तिगत विश्वास को दर्शाते हैं, बल्कि धार्मिक आस्था और उनकी राजनीतिक पहचान के बीच गहरे जुड़ाव को भी उभारते हैं।

यह सन्देश उनकी यह धारणा भी मजबूत करता है कि उनकी कठिनाइयाँ केवल राजनीतिक षड्यंत्र का हिस्सा थीं और वह वैकल्पिक सत्ता के दबाव में नहीं झुकेंगी। हसीना की पार्टी, अवामी लीग, तथा उनके समर्थक इस फैसले को एक निर्णायक मोड़ मानते हैं — एक ऐसी लड़ाई जिसमें सिर्फ न्याय की ही नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक शक्ति की भी बाज़ी लगी है।

यहां यह बात भी महत्वपूर्ण है कि हसीना वर्तमान में भारत में निर्वासन में हैं। उनके समर्थकों और आलोचकों दोनों ही ट्राइब्यूनल की

निष्पक्षता और इसके राजनीतिक मायने को लेकर बहुत संवेदनशील हैं। कई विश्लेषक कह रहे हैं कि यह मुकदमा सिर्फ हसीना की राजनीतिक वापसी या गिरावट का मामला नहीं है, बल्कि बांग्लादेश के भविष्य की दिशा को भी प्रभावित कर सकता है।

हालांकि हसीना के विरोधी उन्हें कठोर शब्दों में आक्रोशजनक राजनेता बताते हैं, जिन्होंने सत्ता के दौरान स्वर दबाने और राजनीतिक विरोधियों के विरुद्ध मजबूत कदम उठाए। अंतरिम सरकार और ट्राइब्यूनल का दायरा और उदेश्य भी कई लोगों की नज़र में विवादास्पद हैं।

यह कहना सही होगा कि शेख हसीना का यह सन्देश न सिर्फ एक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है, बल्कि एक राजनीतिक रणनीति भी है — एक ऐसी रणनीति जिसमें उन्होंने अपने समर्थकों और आलोचकों दोनों को यह याद दिलाया है कि उनकी शक्ति सिर्फ पद या अधिकार में नहीं, बल्कि उनकी आस्था, पहचान और आत्म-सम्मान में निहित है।

जैसे-जैसे ट्राइब्यूनल का फैसला नज़दीक आ रहा है, हसीना की यह टिप्पणी एक महत्वपूर्ण मोड़ बन चुकी है। यह देखना दिलचस्प होगा कि उनके समर्थक इसे कैसे उपयोग में लाते हैं और विपक्षी ताकतें इस बयान को उनकी कमजोर कड़ी के रूप में उद्धृत करती हैं या नहीं। उनके राजनीतिक भविष्य के साथ-साथ, बांग्लादेश की राजनीति में इस लड़ाई के नतीजे बड़े प्रभाव ला सकते हैं — सिर्फ न्यायिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय शक्ति संतुलन,ाधिकारी वैधता और भविष्य की राजनीतिक व्यवस्था के लिहाज से भी।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.